रूपान्तर विकृति या रूपान्तर हिस्टीरिया (Conversion Disorder or Conversion Hysteria)—

— Hysteria एक ग्रीक शब्द है, जिसका अर्थ गर्भाशय (Uterus) होता है। हिपोक्रेट्स ने इसे महिलाओं का रोग कहा था जो गर्भाशय के शरीर में घूमने से होता है। फ्रायड ने हिपोक्रेट्स के इस सिद्धांत को अस्वीकृत कर दिया और बतलाया कि हिस्टीरिया का संबंध दमित मूलप्रवृत्तियों से है, जिसे व्यक्ति छद्म रूप में अभिव्यक्त करता है। जैसे — हिस्टीरिकल पक्षाघात अर्थात् आक्रामक इच्छाओं के लिए आत्म-दंड की अभिव्यक्ति हो सकती है। फ्रायड के अनुसार हिस्टीरिया का स्वरूप रूपान्तरित होता है, जिसमें मानसिक संघर्ष या तनाव आदि का दैहिक लक्षणों के रूप में रूपान्तरण होता है।

फ्रायड के द्वारा ही सर्वप्रथम रूपान्तर पद का उपयोग किया गया था। रूपान्तर विकृति या रूपान्तर हिस्टीरिया ऐसी विकृति है, जिसमें व्यक्ति के तनाव, मानसिक संघर्ष आदि की अभिव्यक्ति कुछ दैहिक लक्षणों के रूप में होती है, जिसका कोई दैहिक आधार नहीं होता है। सामान्यतः इसके लक्षणों की अभिव्यक्ति केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र (CNS) के नियंत्रण वाले अंगों के कार्यों में असमर्थता के माध्यम से होती है।

Cameron के अनुसार — "रूपान्तर हिस्टीरिया एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अचेतन अन्तर्द्वन्द्व किसी शारीरिक लक्षण में परिवर्तित या प्रकट हो जाता है, जिससे की अन्तर्द्वन्द्व की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा तनाव एवं चिंता कम हो जाते हैं।"

Scanned with CamScanner

जैसे — एक व्यक्ति को हस्तमैथुन की आदत थी। इससे उसमें तनाव एवं चिंता हमेशा बनी रहती थी। आकस्मिक एक दिन उसे अनुभव हुआ कि उसके हाथ में पक्षाघात हो गया है, जो कि उसके मानसिक संघर्ष तथा तनाव का रूपान्तर था।

रूपान्तर-हिस्टीरिया के लक्षण —

मनोचिकित्सकों ने रूपान्तर हिस्टीरिया के प्रमुख लक्षणों को निम्नांकित दो वर्गों में बाँटा है —

- # संवेदी लक्षण (Sensory Symptoms)
- # पेशीय लक्षण (Motor Symptoms)

 # संवेदी लक्षण — रूपान्तरित हिस्टीरिया के रोगी के संवेदी प्रक्रियाओं या ज्ञानेन्द्रिय (sense organ) के कार्यों में कुछ विकृति आ जाती है। संवेदन-शून्यता में अत्यधिक कमी और अत्यधिक संवेदनशीलता या अतिसंवेदनशीलता आदि ज्ञानेन्द्रिय संबंधी लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं, लेकिन इन लक्षणों में किसी प्रकार का आंगिक परिवर्तन नहीं पाया जाता है। इसमें रोगी को कई बार ऐसा अनुभव होता है कि उसके शरीर के किसी अंग या किसी भाग पर किसी प्रकार की संवेदना का अनुभव नहीं हो रहा है। कभी-कभी शरीर में दुःख या दर्द के प्रति संवेदनशीलता का अभाव रोगी दिखलाता है। कई बार रोगी असाधारण संवेदना जैसे किसी प्रकार के आवाज को सुनने की संवेदना आदि का भी अनुभव करता है।

इसके अलावा कुछ और संवेदी लक्षण जो दृष्टि एवं श्रवण से संबंधित हैं, रोगी में पाये जाते हैं। जैसे — धुँधली दृष्टि, प्रकाश की असहनीयता, किसी एक आँख से कम दिखना, आंशिक या पूर्ण बहरापन, कुछ अस्पष्ट आवाजों को सुनना आदि लक्षण रोगी में उत्पन्न हो जाते हैं। इन लक्षणों से संबंधित ज्ञानेन्द्रियों में किसी प्रकार का कोई दोष नहीं पाया जाता है।

NOTES

Scanned with CamScanner

APPOINTMENTS

पेशीय लक्षण — रूपान्तर हिस्टीरिया के रोगी के पेशीय अंगों के कार्यों में भी कुछ दोष उत्पन्न हो जाते हैं। पेशीय लक्षणों में हिस्टीरिकल पक्षाघात (Paralysis) सबसे अधिक सामान्य है। इसमें रोगी के किसी एक पैर या हाथ या कभी कभी संपूर्ण बाँया या दायाँ अंग में पक्षाघात हो जाता है जिसके कारण उससे संबंधित शारीरिक क्रिया अवरुद्ध हो जाती है। कभी-कभी पक्षाघात का संबंध किसी विशेष कार्य तक ही सीमित रहता है जैसे — संभव है कि भोजन के समय रोगी का हाथ कार्य न करे, परंतु अन्य कार्य, जैसे लिखना, वाद्ययंत्र बजाना आदि में किसी तरह की परेशानी न हो। इससे पता चलता है कि वास्तव में उसमें किसी प्रकार का कोई शारीरिक रोग नहीं है। पक्षाघात के अलावा रोगी कम्पन, फुदकन, ऐंठन, चलने-फिरने में लड़खड़ा, बोलने में कठिनाई, फुसफुसाहट की आवाज में बोलना आदि लक्षण भी दिखलाता है।

इन लक्षणों के अलावा रोगी में कभी-कभी ऐंठन (convulsion) भी देखने को मिलता है जो बहुत कुछ मिरगी के दौरे के समान होता है। मिरगी के समान रोगी कभी-कभी मूर्च्छा में भी चला जाता है जो कि हमेशा दूसरे लोगों की उपस्थिति में ही आता है। जबकि मिरगी रोग का मूर्च्छा किसी भी परिस्थिति में आ सकता है। ये हिस्टीरिकल मूर्च्छा और मिरगी के मूर्च्छा का मुख्य अंतर है।

रूपान्तर हिस्टीरिया के कारण —

रूपान्तर हिस्टीरिया के प्रमुख कारण निम्नांकित हैं—

→ जब व्यक्ति कुछ अप्रियकर, संघर्षमय एवं खतरनाक परिस्थिति से बचना चाहता है, तो उसमें रूपान्तर हिस्टीरिया के लक्षण विकसित हो जाते हैं।

NOTES

→ जब व्यक्ति किसी खास लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है

परंतु नहीं कर पाता है, तो वैसी परिस्थिति में भी व्यक्ति में रूपान्तरित हिस्ट्रीया के लक्षण विकसित हो जाते हैं, जिससे वह उत्पन्न तनाव को कम कर लेता है।

→ व्यक्तित्व शीलगुण — अध्ययनों से स्पष्ट हुआ है कि कुछ खास-खास शीलगुणों के होने पर उन व्यक्तियों में रूपान्तरित हिस्ट्रीया के लक्षण तेजी से विकसित होते हैं। जिन व्यक्तियों में कुण्ठाशीलता का शीलगुण, सांवेगिक अनुक्रियाशीलता में कमी, किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर बोलने की आदत, नाटकीयता आदि का शीलगुण होता है, उनमें यह रोग उत्पन्न होने की संभावना अधिक होती है।

→ अवांछित प्रवृत्तियों के क्रियान्वयन के प्रति एक तरह के बचाव के रूप में भी व्यक्ति में रूपान्तर हिस्ट्रीया के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

→ कभी-कभी भविष्य की असफलताओं से बचने के लिए भी व्यक्ति में रूपान्तर हिस्ट्रीया के लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

→ रूपान्तर हिस्ट्रीया की उत्पत्ति में सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों की भी भूमिका विशेषज्ञों द्वारा बतलायी गयी है जैसे- यह यह रोग देहातों शहरों तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के लोगों में अधिक पाया जाता है यह रोग पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक होता पाया गया है।

कायप्रारूप विकृति का उपचार (Treatment of Somatoform Disorder)—

कायप्रारूप विकृति के उपचार हेतु निम्न प्रविधियों का वर्णन किया गया है:—

* आमना-सामना (Confrontation)— इस विधि में चिकित्सक रोगी में उसके लक्षणों के प्रति जागरूकता बढ़ाकर उसका उपचार करने की कोशिश करते हैं जैसे- चिकित्सक वैसे रोगी को जिसे देखने में कठिनाई थी, उसे कुछ

Scanned with CamScanner

नहीं दिखलाई देने के बाद भी उसका निष्पादन दृष्टि कार्य पर अच्छा बतलाता है परिणामस्वरूप रोगी की दृष्टि चेतना बढ़ जाती है और उसे धीरे-धीरे दिखाई देने लगता है परन्तु इससे रोग का पूर्ण उपचार संभव नहीं हो पाता है।

* सुझाव (Suggestion) — रूपान्तर हिस्टीरिया के रोगियों में सुझावग्रहणशीलता का गुण अधिक होता है और कुछ चिकित्सकों का यह दावा है कि यदि ऐसे रोगियों को पूरे विश्वास के साथ यह सुझाव दिया जाता है कि उसके रोग के लक्षण समाप्त हो जायेंगे तो ऐसे में रोग के लक्षण धीरे-धीरे समाप्त होते पाये जाते हैं।

* मनोविश्लेषिक सूझ (Psychoanalytic Insight) — इस विधि में चिकित्सकों द्वारा रोगी में मनोविश्लेषिक सूझ उत्पन्न करने पर अधिक बल डाला जाता है। इस तरह के सूझ उत्पन्न होने पर रोगी अपने मानसिक संघर्ष एवं अपने दैहिक लक्षणों के बारे में उत्पन्न होने के कारण को समझ जाता है, तो उसके दैहिक लक्षण बहुत हद तक समाप्त हो जाते हैं।

* अन्य चिकित्सायें (Other Therapies) — कायप्रारूप विकृति के उपचार के लिए दूसरे तरह की चिकित्साओं जिसमें अनेक विषाद विरोधी औषधियों का प्रयोग, दर्द निवारक औषधि, पारिवारिक चिकित्सा आदि का भी प्रयोग सफलतापूर्वक किया जाता है।

अतः कहा जा सकता है कि कायप्रारूप विकृति के उपचार के लिए कई प्रविधियाँ हैं जिनका चिकित्सकों द्वारा परिस्थिति के अनुसार एक या एक से अधिक विधियों का ~~प्रयोग कर~~ चयन कर प्रयोग किया जाता है।